बहुत समय पहले, जब विधाता ने अभी तक धरती और आकाश अलग नहीं किया था। वे बहुत करीब एक साथ थे। आकाश लगभग पृथ्वी पर बैठता था। पक्षी धरती के पास उड़ते थे। जो जानवर दौड़ और उछल सकते थे, वे ऐसा महसूस करते थे जैसे वे उड़ रहे हैं।

एक सुबह एक मूस तालाब पर पानी पी रहा था और उसने पानी में आकाश का प्रतिबिम्ब देखा। कुछ गड़बड़ थी। मूस ने हवा में देखा। उसने देखा कि आसमान चल रहा है। वह धरती से दूर खिंच रहा था। "मैं ऐसा नहीं होने दे सकता," मूस ने कहा। फिर उसने अपने सींग आकाश के नीचे से घुसाए और उसे धरती के पास रखने की कोशिश की। उसने मदद के लिए अन्य जानवरों को भी आवाज़ दी। लेकिन आकाश चलता रहा, और जल्दी ही मूस धरती से ऊपर उठने लगा। उसने अपने सींग बाहर निकाल लिए और वह धरती पर धड़ाम से गिर पड़ा!

भालू ने मूस की आवाज़ सुनी और दौड़ा–दौड़ा आया। उसने ऊपर देखा कि आकाश धरती से दूर खिंच रहा है। "मैं ऐसा नहीं होने दे सकता," भालू ने कहा। वह ऊपर कूदा और उसने आकाश को नीचे खींचने की कोशिश करने के लिए अपने पंजे उसमें घुसा दिए। लेकिन आकाश ऊपर जाता रहा। जल्दी ही भालू उसके साथ–साथ ऊपर जाने लगा। उसने अपने पंजे बाहर निकाल लिए और वह धरती पर गिर पड़ा। बाकी जानवर भी भागते हुए आए। उन्होंने ऊपर देखा कि आकाश धरती से दूर खिंच रहा है। वे ऊपर कूदे और उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उससे बात नहीं बनी। वे सब आपस में बात करने लगे कि क्या करना चाहिए। जब वे बात कर रहे थे, तो दादी मकड़ी आई और बोली, "मेरे पास एक योजना है।"

"दादी मकड़ी," जानवरों ने कहा, "यह गंभीर मामला है। "यह गंभीर मामला है। यह आपके लिए बहुत बड़ा है। विशाल मूस और महान भालू तक भी आकाश को नीचे नहीं खींच पाए, और वे आपसे काफी ज़्यादा शक्तिशाली हैं।" "लेकिन मेरे पास एक योजना है जो काम करेगी।" दादी बोली। "अभी नहीं, दादी। हमारे पास आपके लिए समय नहीं है।"

दादी मकड़ी परेशान हो गई। लेकिन वह समझ गई कि वे सब चिंता में है। वह गाँव से बाहर भागी और सबसे पास वाले पहाड़ की बगल में चढ़ गई। दादी ने एक लम्बा धागा बुनना शुरू कर दिया। उसने बुना और बुना और बुना। उसके बाद उसने उस धागे से जाला बुनना शुरू किया। इसे पूरा करने के बाद, दादी ने जाले को गेंद में लपेट लिया और जाले का एक सिरा पेड़ से बाँध दिया। उसने धागे और जाले की गेंद को आकाश में ऊँचा उछाल दिया। वह बहुत ऊपर चली गई। फिर वह ज़मीन पर गिर गई और खुल गई। दादी मकड़ी से आकाश छूट गया था।

दादी मकड़ी भागी और उसने सारे जाले को इकठ्ठा किया और एक बार फिर गेंद में लपेट लिया। उसने धागे की गेंद ऊपर फेंकी। वह बहुत ऊपर चली गई। लेकिन उससे फिर से आकाश छूट गया। वह ज़मीन पर गिर गई और खुल गई।

दादी मकड़ी भागी और उसने जाले को इकठ्ठा किया और इसे एक बार फिर गेंद में लपेट लिया। उसने ऊपर आकाश में तीसरी बार गेंद फेंकी। इस बार, उसने आकाश के किनारे को पकड़ लिया। जाले की गेंद आकाश में अटक गई। दादी जाले पर जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी चढ़ी और आकाश के पार भागी। उसने जाले का दूसरा सिरा आकाश से जोड़ा और धरती पर वापस कूद गई। जैसे–जैसे वह धरती की ओर गिरी, उसने एक और जाला बुना। उसने बुना, और बुना!

जब वह धरती पर पहुँची, तो दादी मकड़ी ने वह धागा धरती से जोड़ दिया और फिर से पहले धागे पर चढ़ गई। बार–बार, वह चढ़ी, एक नया जाला आकाश से जोड़ा और धरती पर गिरते वक़्त एक जाला बुना।

बाकी बचे हुए उस सारे दिन और सारी रात, दादी मकड़ी जाले बुनती रही और उनसे आकाश और धरती को जोड़ती रही। अगली सुबह–सुबह, आकाश धरती से दादी के जालों से जुड़ा हुआ जितना ऊपर जा सकता था, चला गया। आकाश ने आखिरी बार खिंचने की कोशिश की और धरती हिली। जानवरों ने बात करना बंद कर दिया और आकाश की ओर देखा। जब उन्होंने अपनी आँखें मलीं, तो उन्होंने देखा की दादी के जाले आकाश से धरती तक लटक रहे थे।

जानवर दादी मकड़ी के पास गए और बोले, "हम माफ़ी चाहते है कि हमने आपकी योजना नहीं सुनी, दादी मकड़ी। हम और भी माफ़ी चाहते है कि हमने कहा कि हमारे पास आपके लिए समय नहीं है। आकाश को धरती से जाने से रोकने के लिए धन्यवाद। क्योंकि आपने यह अद्भुत काम किया है, इसलिए आप और आपके वंशज हमारे किसी भी घर में जितना चाहे उतना, हमेशा के लिए रह सकते हैं।"

उस दिन से, मकड़े सब जानवरों और इंसानों के घरों में पाए जाते हैं। भले ही इन्सान सालों पहले का यह वायदा भूल गए हों, मकड़े और जानवर इसे नहीं भूले। अब अगर आप सुबह–सुबह की रोशनी में आकाश में देखें, तो आप कभी–कभी मकड़ी के जाले आकाश से लटके हुए देख सकते हैं। कुछ लोग आपको कहेंगे कि ये सूरज की किरणें हैं। लेकिन, अब आप बेहतर जानते हैं।